# अथर्ववेद संहिता

⇒ वेद की चारों संहिताओं में अथर्ववेद की एक निजी और अन्यतम विशिष्टता रही है। इस वेद के अथर्व शब्द की सुन्दर व्याख्या यास्काचार्य के निरुक्त तथा गोपथ ब्राह्मण में उपलब्ध होती है। निरुक्तकार के अनुसार "**थर्व**" धातु गत्यर्थक है और अथर्व का अर्थ है गतिहीन अथवा स्थिरता युक्त। अथर्ववेद में इस योग का कथन है जिससे चित्त में स्थिरता दृढ़ता लाई जा सके। गोपथ ब्राह्मण ने अथर्व शब्द को "**अथर्वाक्** शब्द का संक्षिप्त रूप कहा है तदनुसार गोपथ ब्राह्मण ने इसका अर्थ प्रस्तुत किया है। तदनुसार गोपथ ब्राह्मण ने इसका अर्थ प्रस्तुत किया है। —
समीपस्थ आत्मा को अपने अन्दर देखना। इस अभिप्राय के अनुसार अथर्ववेद वह संहिता है जिसमें आत्मा को अपने सुन्दर देखने की शिक्षा है।

⇒ वर्तमान समय में इस संहिता का 'अथर्ववेद' नाम ही सर्वाधिक अथवा सर्वमान्य प्रचलित नाम है किन्तु प्राचीन में इसके विविध नाम थे। इनमें कतिपय नाम अन्य ग्रन्थों में है तथा कुछ नाम स्वयं अथर्ववेद में ही है। इस समस्त नामों का आधार रूप में यातो मन्त्र द्रष्टा ऋषि है अथवा अथर्ववेद में प्राप्त तत्तत् विशिष्ट विषयवस्तु है।

Scanned with CamScanner

अथर्ववेद :=> इस वेद का नाम अथर्वन ऋषि के नाम पर पड़ा। क्योंकि इन्हीं ऋषि के द्वारा दृष्ट मन्त्रों की संख्या (1768) इसमें सर्वाधिक है। कुछ विद्वानों के अनुसार 'थर्व' धातु कुटिलता एवं हिंसावाची है अतः अकुटिलता तथा अहिंसा योग से ब्रह्म प्राप्ति कराने के कारण इस संहिता को अथर्ववेद कहा गया। किन्तु धातु पाठ में 'थर्व' धातु का यह अर्थ कहीं प्राप्त नहीं होता।

=> ब्रह्मवेद :=> ऋग्वेदादि संहिताएँ होत्रकर्म तथा योगानुष्ठान आदि की प्रतिपादक थी। किन्तु यज्ञ में ब्रह्म नामक ऋत्विज के कर्म का निष्पादक होने के कारण अथर्ववेद 'ब्रह्मवेद' कहलाया। यह नाम अथर्व वेद में भी उपलब्ध होता है "मुण्डकोपनिषद" के अनुसार ब्रह्मा के द्वारा इस वेद का उपदेश दिए जाने के कारण यह ब्रह्मवेद कहलाया और ब्रह्मा के अथर्वा नामक ज्येष्ठ पुत्र के कारण अथर्ववेद नाम भी प्रसिद्ध हुआ।

=> अथर्वाङ्गिरस वेद :=> इस संहिता का अत्यन्त प्राचीन नाम है। अथर्ववेद की प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों के मुखपृष्ठ पर भी यह नाम पाया जाता है। अथर्वा एवं आंगिरस ऋषियों तथा उनके वंशजों के द्वारा दृष्ट मन्त्रसमूह इस संहिता में होने के कारण यह अथर्वाङ्गिरस नाम पड़ा। ब्राह्मण ग्रन्थों तथा छान्दोग्य उपनिषद आदि में इस संहिता का यह नाम अनेक बार प्रस्तुत हुआ है।

Date:
Page No. 3

=> पाश्चात्य विद्वानों ने संहिता के उस नामकरण का भिन्न ही अर्थ प्रस्तुत किया है। तदनुसार 'अथर्व' एवं 'आंगिरस' शब्द क्रमशः अभिचार की आत्मक एवं तामसिक विधियों का अर्थ प्रगट करते है। 'अथर्व' शब्द आनन्द सुख तथा उन्नति से सम्बद्ध पवित्र अभिचार का द्योतक है और 'आंगिरस' शब्द शत्रु, विरोधी, पापी, तथा मायावी जनों की प्रति अभिशाप से सम्बद्ध विरोधात्मक अभिचार का द्योतक है। यही दोनों प्रकार की अभिचार विधियाँ प्रमुख रूप से अथर्ववेद की विषयवस्तु को प्रस्तुत करती है। — अतः उस संहिता का अथर्वांगिरस नामकरण हुआ।

=> क्षत्रवेद :=> शतपथ ब्राह्मण में अथर्ववेद को क्षत्रवेद की संज्ञा दी गई है। उस संहिता में राजाओं और क्षत्रियों के विविध कर्तव्यों का निर्देश किए जाने के कारण ही सम्भवतः यह नाम दिया गया है।

=> छन्दोवेद :=> अथर्ववेद का यह नाम ऋग्वेद तथा स्वयं अथर्ववेद में उपलब्ध होता है। पुरुषसूक्त में सर्वहुत यज्ञ में उत्पन्न ऋक् साम तथा यजुष् के साथ छन्द (अथर्ववेद) की उत्पत्ति कही गई है।

=> महीवेद :=> स्वयं अथर्ववेद में उस संहिता के लिए 'मही' नाम उपलब्ध होता है। अथर्ववेद के बारहवें काण्ड में प्राप्त प्रसिद्ध एवं महत्वपूर्ण पृथिवी सूक्त के कारण सम्भवतः यह नाम पड़ा है।

Scanned with CamScanner